प्रवासी हिंदी लेखन की पृष्ठभूमि और स्वरूप

सुश्री स्नेहल श्रीकांत गर्जेपाटील, शोधछात्रा, गणेशनगर,स्मिता निवास, बामणोली.सांगली ,

.....

के देश और विदेश से संबंधित होने ,क्तिएक ही समय व्य प्रवास यह एक ऐसी क्रिया है जो कारण विश्व व्यापी व्यवहार बन चुकी है| प्रायकिसी भी देश के लोग देश की आर्थिक अस्थिरता : वाली स्थिति में प्रवास का मार्ग अपनाते हैं| प्रवास का मार्ग अपनाने की संकल्पना के पीछे पश्चिम के पूंजीवादी व्यवहार का अहम योगदान होता है| प्रवास के बहुत से कारण और विभिन्न आयाम रहे हैं| आज असंख्य शिक्षित युवकयुवतियाँ विदेशों में जाकर काम करने और बसने की इच्छा- करते हैं| अपने देश में जन्मेंति के ता एवं संस्कृबढ़े इन लोगों के लिए पराए देश में जाकर उनकी सभ्य-लेप , साथ तालमेल बिठाना सरल नहीं होता| उन्हें बहुत सी सामाजिकओं का नैतिक एवं आर्थिक समस्या , सामना करना पडता है| सबसे बडी कठिनाई सांस्कृतिक अंतर की है| भारतीय प्रवासी के सामने सांस्कृतिक संकट के तीन पहलू हैं| पहला पहलू बेगानी धरती पर भारतीय संस्कृति से निरंतर जुडा रहा जाए और दूसरा पहलू यह है कि बेगानी धरती की संस्कृति को पूर्ण तौर पर ही छोड दिया जाए| तीसरा पहलू है कि सांस्कृतिक परिवर्तन के नियम अधीन मातृभूमि और बेगानी धरती की संस्कृति को अपनी मानसिकता और परिवेश की आवश्यकता अनुसार ढालकर स्वीकार कर लिया जाए|

प्रस्तावना :

- से अभिप्राय हैशब्द 'प्रवास'विदेश वास या अपना घर या देश त्यागकर दूसरे देश में निवास करना| इसी आधार पर प्रवास में रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है| भाषा और साहित्य किसी भी प्रकार की भौगोलिक सीमाओं को स्वीकार नहीं करते क्योंकि साहित्य मानवीय अनुभवों की अभिव्यक्ति होता है| इन अनुभवों का काल एवं स्थान की सीमाओं से मुक्त होना स्वाभविक है| यह स्थिति विशेषतया विभिन्न देशों और उसमें विकसित होनेवाली विभिन्न सांस्कृतिक ईकाईयों में उभरती है जो अपने साहित्य एवं संस्कृति की पहचान कायम रखने के लिए प्रयत्नशील रहती है| आज हिंदी भाषा ,मॉरिशस ,अमेरिका ,कैनेडा ,डति भारतवर्ष से दूर इंग्लैं एवं संस्कृसाहित्य , न प्राप्तजैसे देशों में किसी न किसी रूप में अपना स्था र्कलिया एवं डेन्माआस्ट्रे ,अफ्रीका ,थाईलैंड करने में समर्थ हो रही है|

प्रवासी : परिभाषा ,अर्थ –

ध 'वस' प्रवास शब्दातु से उपसर्ग लगने से बनता है 'प'|के 'रहने' धातु का प्रयोग 'वस' अर्थ में किया जाता है|जाता है उपसर्ग लग जाने से इसका अर्थ बदल 'प्र' | का अर्थ हैशब्द 'प्रवास' घर पर ना रहना ,विदेश यात्रा ,विदेश गमन :| किसी दूसरे देश या बेगानी धरती पर वास करनेवाला व्यक्ति है 'प्रवासी'|

'ऑक्सफर्ड ॲडव्हान्स्ड लर्नर्स डिक्शनरी) 'प्रवासी' में 'Emigrant) का अर्थ है '' -A person who leaves his country to live in another[1]''

प्रवासी वे लोग हैं जो अपना देश छोडकर बेगाने देश अनिश्चित समय के लिए जाते हैंपर , दूसरे देश में बसजाने का फैसला कर लेते हैं| प्रवास की स्थिति अनिश्चित होती है| वह प्राप्ति करने के पश्चात वापिस लौटने का फैसला भी कर सकता है|

'' - का अर्थ है 'प्रवासी' में 'कोशवर्धा हिंदी शब्द'परदेश में रहनेवाला व्यक्तिन मूलस्था , प्रवास करनेवाला (.वि) क्तिन में बसा व्य स्थाछोडकर अन्य|[2]'' प्रवासी शब्द के अर्थ और परिभाषा के बाद प्रवासी हिंदी लेखन की पृष्ठभूमि इस प्रकार से है –

प्रवासी हिंदी लेखन की पृष्ठभूमि :

न छोडकर दूसरे स्थाक्ति या समुदाय अपना जन्मप्रवास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक व्य न पर जाकर बसस्था जाता है| इस प्रक्रिया के दौरान न जाने कितने राष्ट्रों के लोगों ने एक एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण किया हुआ है| इस भ्रमण यात्रा के दौरान ही संस्कृतियों के उदय और अस्त का सिलसिला जारी रहा है| कुछ लोगों द्वारा भिन्न विशेष भूखंडों राष्ट्रोंभिन्न-में स्थायी रूप में रहने से प्रवास की प्रक्रिया पीढ़ीपीढ़ी जारी रहती है-दर-|का प्राकृतिक और सहज 'प्रवास' रहता है महत्त्ववहार आधुनिक युग में विशिष्टव्य भाविकस्वा| आधुनिक युग में इससे जो नया शब्द प्रचलित हुआ है वह है 'वैश्वीकरण'|

ईसा से पहले प्रवाससंबंधी ऐतिहासिक प्रमाण बहुत कम उपलब्ध होते हैं जिन्हें प्रमाणित नहीं कहा जा सकता| डॉ'' ,कैलाश कुमारी सहाय के मतानुसार .विश्व का सर्वप्रथम प्रवासी व्यक्ति है 'मनु'| मनु ने भारत से प्रवास करके मिस्र देश में वास किया| मनु प्रवास का प्रथम पुरुष है|[3]'' एक अन्य धारणा के अनुसार प्रवासी भारतीयों का प्रारंभ महाभारत युद्ध के पश्चात माना जाता है'| महाभारत के युद्ध ने अनेक अनमोल महापुरुषों को खो दिया| इस युद्ध के पश्चात महापुरुषों ने भारत में रहना ठीक न समझा और उन्होंने सोचा कि अपना सुरक्षित जीवन विदेश में व्यतीत किया जाए| प्रवास के लिए एक अन्य वर्ग भी गतिशील रहा है| वह है धर्म प्रचारक और तिर्थयात्रियों का वर्ग| परंतु धर्म के इन प्रचारकों को प्रवासी नहीं कहा जा सकता क्योंकि ये लोग धर्म का प्रचारप्रसार करने के बाद वापिस , लौट आते थे|'

का गदर असफल हो .ई 1857 सन्गया| कृषकों और श्रमिकों की हालत पहले से भी बेहतर हो गई| इस आर्थिक मंदी का अंग्रेजों ने एक और लाभ उठाया कि कृषकों के युवा पुत्रों को युद्ध के बनते आसारों के मुख्य रखकर को पूरा करने के दूसरे देशों पर अधिकार कायम रखने की तमन्ना , भारत से बाहर भेज दिया ,लिए| चौकीदार और दरवान का वेतन अधिक था और साथ ही यह लोग निजी कामधंधे करके और पैसे कमा लेते थे-| इसलिए अनेक लोगों ने अपने रिश्तेदारों को भी उधर बुलवा लिया| इन लोगों से ही जानकारी पाकर भारतीय शिक्षित लोग अधिक पैसा कमाने के लिए अमेरिका लिया आदिकैनेडा और आस्ट्रे ,देशों की ओर चल पडे| यह बात सन् के लगभग की .ई 1903 है| इस तरह भारतीयों का प्रवास काल बीसवीं सदी का आरंभ ही माना जा सकता है|

या में काफी वृद्धि से भारत छोड कर विदेश जा बसने वाले लोगों की संख़्बीसवीं सदी के मध्य हुई| इनमें अनेक भारतीय ऐसे हैं जो भारत से इतर देशों में हिंदी रचना व विकास के काम में लगे हुए थे| इनमें दूतावास के अधिकारी और विदेशी विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक तो है ही साथ ही सामान्य जन भी हैं| जो नियमित लेखन व अध्यापन से विदेश में हिंदी को लोकप्रिय बनाने के काम में लगे थे| विदेश में रहनेवाले हिंदी साहित्यकारों का महत्त्व इसलिए बढ जाता है क्योंकि उनकी रचनाओं ने अलग विश्व हिंदी परिस्थितियों का विकास मिलता है और समस्तअलग देशों की विभिन्न-र पाता हैभाषा में विस्ता| दूसरे देशों में जानेवाले अनेक लोग हिंदी के विद्वान थे और भारत छोडने से पहले ही लेखन में लगे हुए थे| ऐसे लेखक अपनेपचाप लेखन में लगे थे पर उनमें से अपने देश में चु-जिनका लोहा भारतीय ,जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर काफी लोकप्रिय हुए 'धर्मयुग' कुछ भारत में

संसार में भी माना गयासाहित्य| ऐसे साहित्यकारों में उषा प्रियंवदा और सोमवीरा के नाम सबसे पहले आते हैं| बीसवीं सदी का अंत होते होते लगभग अलग विधाओं में -प्रवासी भारतीय अलग 100 रचना कर रहे थेसाहित्य|

कें कार भारत में अपनी पुस्तसवीं सदी के प्रारंभ होने तक पचास से भी अधिक साहित्यइक्की प्रकाशित करवा चुके थे| वेब पत्रिकाओं का विकास हुआ तो ऐसे साहित्यकारों को एक खुला मंच मिल गया और विश्वव्यापी पाठकों तक पहुँचने का सीधा रास्ता भी|पत्रिकाओं 'अनुभूति' और 'क्तिअभिव्य' को रखा कारों के साहित्यकारों की सूची देखी जा सकती है जिसमें प्रवासी साहित्यमें ऐसे साहित्य गया है|

वर्तमान मेंभारतीय मूल के लोग समस्त विश्व में फैले हुए हैं| उन्होंने विदेशों को अपनी कर्मभूमि बनाया है| प्रवासी साहित्य जो पहले उपलब्ध था उससे आज का प्रवासी साहित्य एकदम अलग है| जैसे जेसे तकनीकी विकास और प्रौद्योगिकी अपनी चरम सीमा लांघती गयी वैसेवैसे यह - साहित्य भी अधिकाधिक जनप्रिय होता गया| जनजन तक पहुँचता गया-| प्रवासी भारतीय भारत से दूर होते हुए भी इस माध्यम से बहुत सन्निकट होते गए हैं| भारतीय मूल के विदेशों में रहनेवालों के सृजनात्मक लेखन को प्रवासी साहित्य कहा जाता है और जिन्होंने हिंदी को केंद्र में रखकर या माध्यम बनाकर या हिंदी में लिखा है वे प्रवासी हिंदी साहित्यकार हैं तथा यह बहुत समृद्ध प्रवासी साहित्य है|

महाकाव्य ,एकांकि ,नाटक ,कहानियाँ ,सउपन्या , के अंतर्गत कविताएँत्यप्रवासी हिंदी साहि कथा आदआत्म ,यात्रा वर्णन ,अनूदित साहित्य ,खंडकाव्यि का सृजन हुआ है| प्रवासी साहित्यकारों की संख्या भी उल्लेखनीय है| अभिव्यक्ति पत्रिका में प्रकाशित मनोज श्रीवास्तव के मतानुसार'' ,प्रवासी साहित्य ने हिंदी में मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक द्वंद्व का जो अनुभव दिया हैएक ही समय घर से , दूर होने का दर्द और घर दूर होने की जरुरत का वह हमारी भाषा की एक बडी रचनात्मक पूँजी है|[4]'' साथ ही साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा नीतिम से भारतीयता ता के माध्यसभ्य ,सइतिहा ,मूल्य- जिससे हिंदी प्रवाहित रही है ,को सुरक्षित रखा है|

प्रवासी हिंदी लेखन का स्वरुप :

भारत से इतर देशों में जो हिंदी का साहित्य रचा जा रहा हैउससे अनायास ही हिंदी समृद्ध , रूप विकसित हुआ हैहुई है और उसका एक वैश्विक स्व| पिछले कुछ दशकों से यह विकास
बडी तेजी से हुआ है और उसमें प्रवासी साहित्यकारों का एक विशिष्ट योगदान है| यदि आज हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली तीन भाषाओं में है तो इसका श्रेय उस विशाल प्रवासी समुदाय को भी जाता हैके बावजूद हिंदी को अपनाए हुए है जो भारत से इतर देशों में जाकर बसने ,| इन देशों में रचा जा रहा साहित्यउस देश के परिवेश से ही हमारा परिचय न ,हीं करातावरन उनकी भाषा से , भी ग्रहण कर रहा हैशब्द| फलस्वरुप हिंदी का भी एक नया स्वरूप विकसित हो रहा है और उस हिंदी में लिखे गए साहित्य का एक अलग स्वाद हैएक नई गंध जो पूर्व में अपरिचित थी और उन , देशों में रह रहे भारतीय समुदाय के सरोकारों से ही नही वरन उस समाज की समस्याओं से भी हम परिचित हो रहे हैं जिसका अंग यह प्रवासी समुदाय है|

तरीके से न्नगत हो रहा है और उनके योगदान को विभि का स्वाआज प्रवासी हिंदी साहित्य सराहा भी जा रहा है| प्रवासी साहित्यकारों की रचनाओं को भारत में लोग पढना चाहते हैं| प्रवासी साहित्य की विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर स्तर पर पढाई भी हो रही है| प्रवासी साहित्य और ऐसे

रचनकारों पर शोध हो रहे हैं| यही कारण है कि विभिन्न स्थापितप्रतिष्ठित पत्रिकाओं द्वारा प्रवासी - पर विशेषांक एवं महाविशेषांक प्रकाशित हो रहे हैंसाहित्य| ऐसा माना जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता हैफिर चाहे वो भारतीय समाज हो या अपनाये हुए देश का समाज हो ,| प्रवासी भारतीयों की सोच भारत में हो रही गतिविधियों से भी संचलित होती है और अपने अपनाए हुए देश के परिवेश और उपलब्धियरिश्तों ,ताओंविशिष्ट ,संघर्ष ,ोंं पर भी आधरित होती है| प्रवासी साहित्यकार अपने लेखन के द्वारा एक भिन्न समाज से परिचित करवाता है|

हैसंपन्न त अत्यंअंत में कहा जा सकता है कि प्रवासी साहित्य| प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी पारखी नजरों और पैनी कलम से अपनी एक अलग पहचान बनाई है| हम इनके साहित्य को पढकर विदेशों के अनेक अनुभवोंसंवेदनाओं से जुड सकते हैं ,भावनाओं ,|

संदर्भ :

(1 Ed. A.S. Hornby, 'Oxford Advanced Learner's Dictionery of Current English (Oxford University Press) Pg. 498.

(2)संपा ,कोशवर्धा हिंदी शब्द ,नारामप्रकाश सक्से (www.hindisamay.com

(3 ,(1994 दिल्ली ,अविराम प्रकाशन) प्रवासी भारतीयों की हिंदी सेवा ,कैलाश कुमारी सहाय .डॉ .50 .सं.पृ

(4 www.abhivyakti-hindi.org